आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 20/06/2024; Accepted: 21/06/2024; Published: 26/06/2024

लोकमंगल के कवि: संत बूला (बुल्ला साहब)

- **डॉ. वन्दना श्रीवास्तव**
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
श्री. जे. एन. पी. जी. कॉलेज लखनऊ,
मो. नं. – 7754929451
ई मेल – vandanaravi24feb@gmail.com

डॉ. वन्दना श्रीवास्तव, **लोकमंगल के कवि: संत बूला (बुल्ला साहब)**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 2/जून 2024,(130-138)

बावरी पंथ के यारी साहेब के शिष्य बुल्ला साहब भुड़कुड़ा सिद्ध पीठ की गद्दी गाजीपुर के प्रथम महंत थे। 'हिन्दी संत काव्य संग्रह'के संपादक उनके विषय में लिखते हैं – "बुल्ला साहब जाती के कुनबी थे और इनका असली नाम बुलाकी राम था।........ इनका समय सं. 1750 – 1825 तक बतलाया जाता है। "1 किन्तु डॉ. इन्द्र देव सिंह बूला साहब का परलोक गमन सन 1766 में मानते हैं। 2 इनके जन्म स्थान के विषय में प्रमाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु यह निश्चित है की इनका सत्संग स्थान भूड़कुड़ा था। ये वहाँ के जमींदार ठाकुर गुलाल सिंह के हलवाहे थे और सदा साधना में लीन रहते थे। खेतों का निरीक्षण करने गये जमींदार गुलाल सिंह ने एक दिन उन्हे अपने खेत में ही समाधि में लीन देखा और क्रोध में "उन्होने जाते ही बुलाकी राम पर चरण प्रहार कर दिया।......बुलाकी राम ने कहा कि आपने यह क्या किया?मै तो इस समय संतों की पंगत में दही परोस रहा था। ....गुलाल सिंह ...ने बुलाकी राम के चरणों में अपनी पगड़ी रख दी,उनसे क्षमा माँगी तथा उनके शिष्य हो गये। उसी समय से बुलाकी राम बुल्ला साहब हो गये।"3 किन्तु यह घटना किस तिथि को हुई यह ठीक ठीक ज्ञात नहीं है। इस घटना के बाद ही गुलाल सिंह उनके शिष्य बन गये और उन्होने भूड़कुड़ा मे बुला साहब का आश्रम बनवाया। अधिकांश संतों की भाँति बुला साहब भी निम्न वर्ण (कुनबी) से संबंध रखते थे। अपने छोटी जाति का होने के संबंध में वे स्वयं कहते हैं –

" अधम अधीन अजाति बुल्ला, नाम से लवलीन।
अर्थ धर्म अरु काम मोछहीं, अपनो पद दीन। " 4

इस कथन से यह भी पता चलता है कि बुला साहब पढ़े लिखे नहीं थे। यद्यपि वे पढ़े लिखे नहीं थे किन्तु वे बहुश्रुत थे और उपनिषद तथा वेदों के संबंध में ज्ञान रखते थे। वे स्वयं कहते हैं –

"श्रवन सुनिले नाद प्रभु की,नयन दर्शन पेखु।

उपनिषद आस वेद गावत,अचल अमर अलेखु।।" 5

निर्गुण संतों ने गुरु की महत्ता को ईश्वर से ऊपर माना है । जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में गुरु की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। बुल्ला साहब के गुरु के रूप में यारी साहब को स्वीकार किया जाता है। स्वयं बुल्ला साहब कहते हैं-

"यारीदास परम गुरु मेरे, बेड़ा दिहल लखाय।

जन बुल्ला चरनन बलिहारी,आनन्द मंगल गाय॥" 6

बूला साहब की रचनायें "भूड़कुड़ा में प्राप्य 'राम जहाज' और 'महात्माओं की वाणी' में तथा 'नानक ग्रंथ में प्रकाशित हैं। वेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद ने भी इनकी रचनाओं को 'बुल्ला साहिब के शब्द सार' नाम से प्रकाशित किया है।

बुल्ला साहब ने सदैव सच्चे मानव मूल्यों और आदर्शों को अपनी बानियों में प्रकाशित किया है। उन्होने निर्गुण निराकार ब्रह्म, माया, बाहयाचार व बाह्याडंबरों की निःसारता को अपनी बानियों का विषय बनाया। स्वयं अपनी आध्यात्मिक उपलब्धियों के संबंध में कभी कोई प्रचार उन्होने नहीं किया वरन उनकी साधना और आदर्शों का प्रकाश स्वतः ही दूर दूर तक पहुँच गया और वे जन जन के हृदयपटल पर विराजमान हो गये। निर्गुण ब्रह्म के उपासक बुल्ला साहब का ब्रह्म निराकार है और उस अविनाशी पूर्ण ब्रह्म के समक्ष ही वे नतमस्तक होते हैं –

"रूप रेख तंह बरनि न जासी। निरंकार आपुहिं अबिनासी॥

जन बुल्ला तंह रहै हजूरा। पूरन ब्रह्म देखा जंह नूरा॥" 7

गुरु की कृपा मिलने पर ही साधक इस ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है। इससिलिए सभी संतों ने गुरु की महिमा गायी है। बुल्ला साहब भी गुरु के महात्म्य का वर्णन करते हैं और हाथ जोड़ कर गुरु के चरणों में समा जाना चाहते हैं- "जन बुल्ला बोलाहि कर जोरे, सतगुरु चरन समाँव। "8

शांडिल्य ने पुरानुरक्ति अर्थात निष्काम अनुरक्ति को भक्ति माना है। निर्गुण संतों अपने साहित्य के माध्यम से ईश्वर के नाम की महिमा को भिन्न -भिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है। बुल्ला साहब की रचनाओं में भी नाम की महिमा, भक्ति की महत्ता,प्रेम की महिमा,संसार की असारता, सुरति निरति आदि का वर्णन प्रमुखता से मिलता है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं –

नाम महिमा – “साईं के नाम की बलि जांव।

सुमिरत नाम बहुत सुख पावो, अंत कतहूँ नहिं ठाँव॥ ”9

भक्ति की महिमा – साची भक्ति गोपाल की, मेरो मन माना।

मानसा बाचा कर्मना, सुनु संत सुजाना॥....10

संसार की असारता – ....झूठा यहु संसार झूठ सब क़हत है।

सत्त शब्द की रहनि कोऊ नहिं गहत है॥”11

शब्द विवेक तथा सत्संग की महिमा के विषय मे वे कहते हैं –

.....भाव संग तू भक्ति करि ले, प्रेम सों लवलीन।

सुरति से तूँ बेड़ा बांधो, मुलुक तीनों छीन। ”12

बुल्ला साहब साधना के पथ पर आगे बढ़ते हैं तो वे कबीर दास की परंपरा से जुड़ जाते हैं।“बूला साहब ने .....सुरति शब्दयोग की साधना की ओर बार बार संकेत किया है।”13 ‘सुरति’ शब्द का प्रयोग संत साहित्य में चित्त प्रवाह के लिए और ‘निरति’ शब्द का प्रयोग सहज समाधि अथवा शून्य अवस्था के लिए होता है। बुला साहब कहते हैं –

“सोहं हंसा लागलि डोर। सुरति निरति चढु मनुवाँ मोर॥

झिलमिलि झिलमिलि त्रिकुटी ध्यान। जगमग जगमग गगन तान॥” 14

सुरति निरति के अतिरिक्त अनहत नाद, उन्मनी अवस्था जैसी साधना संबंधी पारिभाषिक शब्दावलियों का भी प्रयोग बूला साहब अपनी बानियों में करते हैं। वह शब्द या ध्वनि जो बिना किसी माध्यम या स्रोत के सुनाई दे ‘अनहत नाद’ है। जब कुंडलिनी शक्ति ऊर्ध्वस्थ हो जाती है तो यह नाद अनवरत सुनाई देने लगता है। बूला साहब इस अनहत नाद का वर्णन करते हुए कहते हैं कि अजपा जाप के द्वारा सोहम की डोरी से बुल्ला उसी ज्योति मे प्रवेश कर जाते हैं –

“सामहि उगवै सूर भोर ससि जागई।
गंग जमुन के संगम अनहद बाजई॥
अजपा जापहिं जाप सोहं डोरि लागई।
बुल्ला ता में पैठि जोति में गाजई॥ ”15

संत कवियों ने जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है उनमे से एक महत्वपूर्ण शब्द है 'उन्मनी अवस्था' । सुषुम्ना मार्ग से प्राण वायु संचारित होने पर जब मन की गति स्थिर हो जाती है तो उस अवस्था को उन्मनी अवस्था कहते हैं। इसी प्रकार चाचरि मुद्रा, भूचरि मुद्रा, अगोचरि मुद्रा, खेचरि मुद्रा का वर्णन भी वे करते हैं। बूला साहब इन अवस्थाओं का वर्णन करते हुए कहते हैं –

" ....उन्मनी मुद्रा लागी समाधि। रवि ससि पवनहि राखो बांधी।।
चाचरि मुद्रा से प्रीति लगावो। भूचरि मुद्रा से प्रेम बढ़ावों।।
अगोचरि मुद्रा से आन भूगावो। खेचरि मुद्रा से दरस दिखावो॥ ...."16

बूला साहब की रचनाओं में आत्मचिंतन एवं आत्मानुभाव का बाहुल्य है। वे उसी ब्रह्म की बात करते हैं जो उनके लिए अनुभवगम्य है। कोरी सिद्धान्त चर्चा उन्हे स्वीकार नहीं। साधना संबंधी आत्मानुभाव बताते हुए बूला साहब कहते हैं कि जब आकाश काले बादलों से आच्छादित हो जाता है और घनघोर अनहत नाद सुनायी देता है तब जाकर प्रकाश त्रिकुटी पर उद्भासित होता है। उस समय होने वाली बारिश में साधक भीग जाता है –

"श्याम घटा घनघोर चहूँ दिशि आइया।
अनहद बजै अघोर तब गमन सुनाइया॥
दामिनी दमक जे त्रिवेणी जनाइया।
बूला हृदय विचारि तहाँ मन लाइया॥" 17

संत परंपरा में योग साधना पर विशेष बल दिया गया है। योग की सार्थकता तभी है जब रामनाम का ज्ञान कराये अन्यथा सब निरर्थक है। इन कवियों का मानना है कि योग अंतस के शुद्धिकरण का साधन है। शिष्य गुरु की शरण गहता है। गुरु उसे योग साधना सिखाते हैं जिससे शिष्य सहज समाधि की स्थिति को प्राप्त कर लेता है। बूला साहब भी योग साधना के संबंध में कहते हैं –

"संतों जोग जानै तौन।
आपु आपु विचारि लेवै,रहै घट में मौन।
चाँद सूर एकग्र करिके,सुखमना धरि पौन।
तंह होत है अनहद गहागह,मिटो मन कौ धौन।
तब दास बुल्ला बानी बोलै, निर्त ताथई ऐन॥ "18

बूला साहब समाधिस्थ हो शून्य पथ का अनुगमन करते हैं। अपने साधना पथ की झांकी प्रस्तुत करते हुए वे बताते हैं कि साधना के विभिन्न सोपान पार करते हुए साधक उज्ज्वल बिन्दु का दर्शन करता है और वह बिना नयन,श्रवण और स्वरूप वाले ब्रह्म का साक्षात्कार करता है –

"प्रभु निराधार आधार उज्जल, बिन्दु सकल बिराजई।.......
बांधि पवनहिं साधि गगनहिं, गरजि गरजि सुनावई।

तंह हंस मुनि जन चूगते मनि, रस परसि-परसि अघावई॥

बिना कर मुख बेनु बाजै, बिना श्रवनन गुंजई।

बिना नैनन दरस देखो, अगति गतिहिं जनावाई॥

वा के जाति-पाँति न नेम-धर्महूँ, मर्म सकल गंवावाई।

आपु-आपु विचारी देखो, ऐसों है वह रावई।।" 19

जहाँ भी बूला साहब उस अलख, अगम अप्रत्यक्ष ब्रह्म को अपने भीतर देखते हैं और उस रहस्यमयी का वर्णन, उस तक पहुँचने की साधना जब अपनी बानियों में करते हैं वहाँ उनकी बानियों में अद्भुत सौंदर्य निखार आता है। बूला साहब अपने गुरु यारी साहब का स्मरण करते हुए कुंडलिनी जागरण की ऊर्ध्व गमन की साधना के राग नट में निबद्ध इस पद में साधना कि तैयारी का वर्णन करते हैं और अद्भुत सौंदर्य कि सर्जना करते हैं –

"नैना मेरो निपट विकट ठौर अटके।

सुख को साथ सबै कोइ चाहै, दुखहिं परे पर छटके।

भौंह कमान नैन दोउ गाँसी, जहाँ लगे तहाँ लटके।

जन बुल्ला दाया सतगुरु की, देखु सकल जग भटके॥ 20

अन्य निर्गुण संतों की भाँति बूला साहब ने भी ब्रह्म को पुरुष (पति) और स्वयं या साधक को स्त्री (पत्नी) के रूप में देखा है। सांसारिक प्रेम के उदात्तीकरण के माध्यम से उन्होने परमात्मा से मिलन की तड़प, बाधायें व मार्ग को प्रशस्त करती हुई सहज, सरस व मार्मिक रचनाएँ की हैं। साधक की परमात्मा से मिलन की आतुरता तथा व्याकुलता को श्रंगार के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए बूला साहब कहते हैं -

"देखो पिय काली घटा मो पै भारी।

सूनी सेज भयावन लागी, मरौं विरह की जारी।

प्रेम प्रीति यहि रीति चरन लगु, पल छिन नाहीं बिसारी।

चितवत पंथ अंत नहिं पायो, जन बुल्ला बलिहारी।".21

बूला साहब की बानियों में स्पष्ट है कि उनका विश्वास वेदान्त दर्शन का अनुसरण करता है। वे सृष्टि के क्रमिक विकास वाले पक्ष में भी वेदान्त दर्शन को स्वीकार करते हैं और कहते हैं –

"खोज ले निज वस्तु अपनी सकल घट रहि छाय।

तीन लोक में गम्म जाके, द्वार सेवा लाय।

जन बुल्ला कहि आगम मेला, बिरल जन कोई पाय।।" 22

बूला साहब सभी जड़ व चेतन में,सम्पूर्ण चराचर में उसी परम तत्व की सत्ता स्वीकार करते हैं। इस परम तत्व से, सम्पूर्ण विश्व मे रमे इस राम से मिलन की रीति बताते हुए बूला साहब ब्रह्म ज्ञान की बात कहते हैं –

"काया काशी घट करहु नहान,युग युग पावहु पद निर्वान।

काशी वासी पाँच निवासी, निर्गुन तामें बसत देवान।

इनको जानि करिअ स्नान, होय मुक्ति मिटे अज्ञान।

युग विद्या अक्षर परमान, साधु संहति मिलि शब्द पिछन।

जन बूला बोलै ब्रह्मज्ञान, राम मिलन की चाही ध्यान।"23

ब्रह्म व जीव के बीच माया भेद उत्पन्न करती है। वह जीव को भटकाकर ब्रह्म से दूर कर देती है। मूर्ख जीव इसी संसार में भटकता रहता है और अपने वास्तविक लक्ष्य से दूर हो जाता है। इसीलिए संत माया को ठगिनी और डायन कहते हैं। बुल्ला साहब भी माया को डायन कहते हुए उसे यमदूत के समान बताते हैं –

...यह माया जस डाइनी,हरहि लेति है प्रान।

पल पल छिन छिन व्यापई,है जमदूत समान। ...24

संतकवियों ने निर्भीकता से भेदमूलक जातीय व्यवस्था पर कभी समझाते हुए और कभी कठोर शब्दावली में प्रहार किया है। बुल्ला साहब का भी मानना है कि सभी प्राणी एक ही ईश्वर की संतान हैं। कोई ऊँची या नीची जाति का नहीं है। हिन्दू तुर्क का विभाजन मिथ्या है। सभी मनुष्यों की उत्पत्ति एक ही प्रकार से हुई है। अतः सभी एक ही कुल और परिवार के हैं –

"कैसे हिन्दू तुरुक कहाया,सब ही एकै द्वारै आया।

कैसे बाहमन कैसे सूदा,एक हाड़ चाम तन गूदा।"25

एक सच्चे संत की भांति बूला साहब जाति पांति का निषेध करते हैं। एक ही बीज से सब उपजे हैं अतः छोटे बड़े का भेद निरर्थक है। वे कहते हैं –

.....क़हत फिरै हम सबसे ऊपर, भूलो फिरत दिवाना।

बीज एक अंकुर है एकै, फल फूल रहत समाना।... 26

बूला साहब मानते हैं कि यदि अन्तःकरण शुद्ध है तो तीर्थ स्थलों में भ्रमण निरर्थक है। वे कहते हैं कि ईश्वर केवल मंदिर मस्जिद मे नहीं है। वह तो हमारे भीतर ही स्थित है। इसलिए हमे हमारे शरीर के भीतर जो काशी स्थित है उसी में स्नान करना चाहिये – "काया कासी घट करहु नहान, युग युग पावहु पद निर्वान।"27

उपरोक्त पंक्तियों में रूपक अलंकार की सुंदर छटा दिखाई देती है। बूला साहब की रचनाओं में अलंकारों को सप्रयास सम्मिलित नहीं किया गया है वरन ये अनायास ही आए हैं। विभावना अलंकार का सुंदर प्रयोग देखिये -

बिना नीर बिनु मालिहीं, बिनु सींचे रंग होय।

बिनु नैनन तंह दरसनो,अस अचरज इक सोय॥”28

संत कवि ब्रह्म प्राप्ति के लिए संसार का त्याग कर पर्वत कन्दराओं में जाकर साधना नही करते वरन वे जन मानस के बीच ही रहकर उनके सुख दुख के साथी होते हैं। यही कारण है कि उनकी बानियों में जन जीवन के चित्र, लोक संस्कृति व लोक मान्यताओं की झलक दिखाई देती है। वसंत, होली, जैसे राग प्रायः सभी संतों ने लिखे हैं। बुल्ला साहब भी इसका अपवाद नहीं हैं। उदाहरण दृष्टव्य है –

हौं खेलत फाग सुहावन,हरि आए मन भावन।

जब तें कृपा किये आ जन पर,मोच्छ मुक्ति फल पावन॥

बाजत ताल मृदंग डफ़्फ़ सुर, सरस राग सुर गावन।

देत दान तन मन न्योछावरि, भाँवरि संत सुभावन।

जन बुल्ला ऐसी होरी खेलो, अद्भुत काला समावान॥ 29

प्रस्तुत रेख़ता में पूर्वी उत्तर प्रदेश की फाग गायन कि परम्परा तो दिखती ही है साथ यहाँ प्रचलित वाद्य ताल, मृदंग, झांझ, डफली का भी वर्णन मिलता है।

इसके अतिरिक्त लोक छंद झूलना व हिंडोला भी उन्होने लिखा है। वे “प्रेम हिंडोला झूलना रे, जंह अलख धनी की मौज धनी।”30 कहकर उस अलख ब्रह्म रूपी पति के साथ प्रेम हिंडोला झूलते हैं तो वहीं हिंडोला लिखते हुए वे पटरी,डोरी, खंभा आदि का वर्णन करते हैं –

हिंडोला झूलहि आतम नारी।

काम क्रोध जे कर्म पटरी, मन पवन डोरी लाय।

तंह चाँद सूरज खंभ गड़िया, गंग जामुन बंधाय।

पौढ़िया ब्रह्मण्ड चढ़िके, गगन गरजि सुनाय।

झूलहिं जो हंस कलोल करि के, सखिन को संग लाय। 31

काव्य रूप की दृष्टि से बूला साहब ने पद, साखी, रमैनी, अरिल तथा चौपाइयाँ लिखी हैं। मुख्यतः बूला साहब की रचनाओं में भोजपुरी के शब्द दिखाई देतेहैं। शुद्ध भोजपुरी में लिखा गया उनका छंद प्रस्तुत है –

“मातल मनुवाँ घटहिं समैबों हो।

जौने गैलै संतें गैलै, तौने जाइबों हो॥

सहज सरूपै लिहले, हरि गुन गइबों हो।

जन बूला बानी बोलै, मरि फिरि जीया हो। " 32

बूला साहब की भाषा में भोजपुरी के अतिरिक्त कहीं अवधी की रंगत है तो कहीं पंजाबी की छाया भी उसमे दिखती है। पंजाबी का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

"ख़लक़ के अरवदा ख़लक़ के जावदा।

ख़लक़ के नराम नाम नहिं गावदा। ...." 33

यद्यपि बूला साहब की भाषा अत्यंत सुसंस्कृत नहीं है परंतु वह ज्ञान की उत्कृष्टता से पूर्ण है। उन्होने हमेशा लोक को ध्यान मे रख कर ही आध्यात्मिक पक्ष की स्थापना की है। इनकी भक्ति पद्धति आध्यात्मिक एवं लौकिक दोनों पक्षों के समन्वय से निर्मित होती है। लोकमंगल की भावना से परिपूर्ण बूला जी संत कवियों के मध्य विशेष स्थान के अधिकारी हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR)द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त लघु शोध परियोजना'उत्तर प्रदेश के संतकवि एवं उनके के काव्य का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन' का एक भाग है। उक्त परियोजना हेतु मैं ICSSR का आभार व्यक्त करती हूँ।

संदर्भ सूची:

1. हिन्दी संत काव्य संग्रह, श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी, पं. परशुराम चतुर्वेदी पृ.3..
2. भूड़कुड़ा की संत परंपरा, डॉ. इन्द्र देव सिंह पृ. 45
3. हिन्दी संत काव्य समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ. वासुदेव सिंह पृ. 75
4. प्रेम शब्द 15, बुल्ला साहिब का शब्दसार, पृ. 13
5. महात्माओं की वाणी पृ. 79
6. चेतावनी,शब्द 2, बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. 7
7. ब्रह्मज्ञान शब्द 5,बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. 14
8. हिन्दी संत काव्य संग्रह, श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी, पं. परशुराम चतुर्वेदी पृ.3.1
9. गुरु और नाम महिमा शब्द 3,बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. .3
10. प्रेम शब्द 1, बुल्ला साहिब का शब्द सार,पृ. .8
11. हिन्दी संत काव्य संग्रह, श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी, पं. परशुराम चतुर्वेदी, पृ.3.2

12. प्रेम, शब्द 15, बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. 12

13. उत्तर भारत की संत परंपरा, आ. परशुराम चतुर्वेदी पृ. 1..

14. हिन्दी संत काव्य संग्रह, श्री गणेश प्रसाद द्विवेदी, पं. परशुराम चतुर्वेदी पृ.3.1

15. अरिल छंद .4, बुल्ला साहिब का शब्दसार, पृ. 25

16. भेद, शब्द 2,बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. 16

17. महात्माओं की वाणी। पृ. 79

18. प्रेम शब्द 6, बुल्ला साहिब का शब्द सार, पृ. 1.

19. गुरु और नाम महिमा,शब्द 4,बुल्ला साहिब का शब्दसार, पृ.4

20. भेद, शब्द 7, बुल्ला साहिब का शब्दसार,पृ. 17

21. प्रेम, शब्द 11, बुल्ला साहिब का शब्दसार, पृ. 11

22. गुरु और नाम महिमा,शब्द 5, बुल्ला साहब का शब्द सार, पृ. 4,

23. भूड़कुड़ा की संत परंपरा, डॉ. इन्द्र देव सिंह पृ. 98,99

24. मिश्रित,शब्द 14,बूला साहब का शब्द सार,पृ. 3.

25. संत वाणी संग्रह भाग 2,पृ. 185

26. शब्द 4,चेतावनी, बूला साहब का शब्द सागर, पृ. 8

27. भूड़कुड़ा की संत परंपरा, डॉ. इन्द्र देव सिंह पृ. 1

28. साखी 6,बूला साहब का शब्द सार,पृ. 32

29. शब्द 6,रेख़ता बूला साहब का शब्द सार, पृ. 2., 21

30. झूलना 1, बूला साहब का शब्द सार, पृ.21

31. हिंडोला 1,बूला साहब का शब्द सार, पृ. 18

32. गुरु और नाम महिमा शब्द 9,बुल्ला साहिब का शब्द सार,पृ. .6

33. भूड़कुड़ा की संत परंपरा, डॉ. इन्द्र देव सिंह पृ. 269

****